शासकों, नेताओं, आचार्यों एवं धर्माचार्यों की

पात्रता एवं योग्यता

अभी जो व्यवस्था एवं संगठन चल रहे हैं, उनमें पात्रता एवं स्तर की कोई विशेष कसौटी नहीं है।

आज ज्यादातर खाद्य पदार्थों, दवाइयों, वस्तुओं या उपकरणों आदि का क्वालिटी निर्धारण "एगमार्क" या "आई.एस.आई." मार्क द्वारा किया जाता है। परन्तु वर्तमान जनतांत्रिक व्यवस्था में बिना "आई.एस.आई." मार्क वाली योग्यता के ही राजनेता, शासक, अधिकारी, पदाधिकारी, मठाधीश, धर्माचार्य एवं धर्मगुरू आदि नियुक्त कर दिये जाते हैं, जिसके कारण पूरी व्यवस्था एवं शासन-तंत्र अनैतिक, पराधीन, कमजोर, निष्क्रिय एवं भ्रष्ट आचरण करने लगता है। अतः नई व्यवस्था में युग निर्माताओं, युग-शिल्पियों, आचार्यों, धर्माचार्यों, धर्मगुरूओं आदि को अनिवार्य रूप से वैयक्तिक "आई.एस.आई." वाले कठोर चारित्रिक मानदंडो से गुजर कर ही शासन-संचालन की व्यावहारिक योग्यता एवं पात्रता अर्जित करनी होगी। मर्यादाओं एवं आदर्शों का पालन करना होगा, तभी उन्हें शासन-सत्ता संचालन के योग्य माना जायेगा।

महाभारत निर्माण मंच

जिसने बेच दिया ईमान, करो नहीं उसका गुणगान।
शासक जहाँ चरित्र-विहीन, वहीं आपदा नित्य नवीन।

कर्तव्यतन्त्र (DUTYCRACY)

युग परिवर्तन की नई विश्व व्यवस्था, धर्म एवं राजनीति

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

प्रमोद कुमार वात्सल्य

जनतन्त्र

न कोई प्रजा है, न कोई तन्त्र है,
यह आदमी के खिलाफ, आदमी का खुला षडयंत्र है।

प्रथम प्रकाशन-जून 2002

जब अच्छे व्यक्ति शासन करने का अपना कर्तव्य छोड़ देते हैं तो उन्हें बुरे, अपराधी और भ्रष्ट लोगों द्वारा शासित होने का दण्ड भोगना पड़ता है।